क्या हम, जो संत हैं, न्याय कर सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

उत्तर: इस उत्तम प्रश्न के लिए धन्यवाद। यह समझना बहुत ज़रूरी है कि उस दिन जब हम प्रभु के साथ न्याय की गद्दी पर बैठेंगे, हम अधिकार में उसके समान होंगे—लेकिन अंतिम न्याय केवल यीशु मसीह द्वारा ही किया जाएगा। हमारी भूमिका वकील या मध्यस्थ जैसी होगी।

एक उदाहरण लीजिए: कोई व्यक्ति जिसने पापमय जीवन जिया—जैसे कि व्यभिचार किया—और अब कहता है कि उसने पश्चाताप किया है। प्रभु उससे पूछ सकते हैं कि उसने ऐसा आचरण क्यों किया। शायद वह कहे, “हमारी पीढ़ी में स्मार्टफोन और इंटरनेट था, जिससे प्रलोभन से बचना कठिन था।” फिर, मान लीजिए प्रभु के पास खड़े मीकाएल से पूछा जाए कि उसने इंटरनेट युग में इन प्रलोभनों से कैसे विजय पाई। वह अपने उत्तर देगा—और वही उत्तर, जो तुम एक संत के रूप में दोगे, उस पापी के लिए न्याय का मापदंड बन जाएगा।

याद रखिए प्रभु यीशु ने मत्ती 12:41–42 में क्या कहा:

“निनवे के लोग न्याय के दिन इस पीढ़ी के साथ उठ खड़े होंगे

क्या हम, जो संत हैं, न्याय कर सकते हैं?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

और इसे दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना के प्रचार पर मन फिराया था, और देखो, यहाँ योना से बड़ा है।
दक्षिण की रानी न्याय के दिन इस पीढ़ी के साथ उठेगी और इसे
दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलेमान की बुद्धि को सुनने के
लिए पृथ्वी के सिरे से आई थी, और देखो, यहाँ सुलेमान से बड़ा है।”
(मत्ती 12:41–42 ERV-HI)

जिस प्रकार शबा की रानी उस पीढ़ी का न्याय करेगी, उसी प्रकार हम भी अपनी पीढ़ी के न्याय में भाग लेंगे।

प्रभु आपको आशीष दे।

Share on:
WhatsApp